

णामहिते R. 1,39,22. 77,10. R. Gorr. 2,100,3. 3,69,8. 6,106,3. R. ed. Bomb. 6,87,22. Spr. 4491. BHĀG. P. 1,19,17. 8,10,1. व्यसनेषुयुक्तः Spr. 460, v. l. मङ्गलाचार° M. 4,145. fg. 9,259. तपो° MBh. 1,7626. 3,6016. परहितव्यापारयुक्तात्मन् Spr. 2004. ध्यानयुक्तेन मनसा Verz. d. Oxf. H. 53,a,12. *geübt, geschickt, erfahren* R. 5,33,7. धर्मार्थयोर्ज्ञाने MBh. 5,1104. श्रोत्रे विनये चैव युक्तां वारणावाजिनाम् R. 2,1,20. कोषसंयुक्तो, बलपरिग्रहे R. Gorr. 1,7,7. 10. अयुक्तबुद्धिगुणादोपदर्शने 3,37,23. अ° (= अ-विवेकिन् Comm.) BHĀG. P. 10,73,11. — 3) *auslegen* Geschosse (auf den Bogen): युजोत्र बाणान् MBh. 1,7025. अयुञ्जमेव चैवाहं तदस्त्रं भृगुनन्दने 5,7291. मा युञ्ज दिव्यान्वास्त्राणि 3,12309. 5,7265. *befestigen*: दिव्यं चेदं किरीटं मे स्वयामन्त्रेण युजोत्र ह 3,12278. आभरणानि Spr. 3307. वेकारं नेत्रयोर्बुद्ध्यान्कारं सर्वसंधिषु *fügen auf* BHĀG. P. 6,8,8. शिरसि कपालानि *setzen auf* LĀTJ. 8,8,18. येनैव रेतो युनक्ति *fügen in, thun in* ÇAT. Br. 7,5,4,33. लोहदि युञ्जन् *in's Herz schliessend* BHĀG. P. 3,24,34. med. und pass. *sich hängen an* (eig. und übertr.): युजानाश्च विलम्बिरे (so die neuere Ausg.) | काण्ठेषु HARIV. 11767. युञ्ज्येत्त्र न परिउतः Spr. 100. — 4) eine Zuneigung u. s. w. Jmd (loc.) *zuwenden*: मयि यो यस्तव स्नेहे रोकमेने स युज्यताम् MĀRĪKH. 153,17. युज्यमानया भक्त्या भगवति BHĀG. P. 3,25,19. आत्मानम्, मनः, मानसम्, चेतः, चित्तम्, चित्ताम् *den Geist, den Sinn, die Gedanken auf einen Punkt richten*; act. und med. MAITRĀJ. 6,3. BHAG. 6,15. 10. 28. 9,34. BHĀG. P. 2,1,19. 2,7. 4,1,26. die Ergänzung im loc. 3,9,23. 24,43. 27,26. 4,28,38. 6,2,40. 7,5,41. 9,6,51. 54. Ohne आत्मानम् u. s. w. *sich vertiefen*; med. MBh. 13,750. MĀRK. P. 43,40. युजान् MBh. 14,562 (in beiden Ausgg. fälschlich भुजान्). BHĀSHĀP. 64. act. MBh. 14,546. BHĀG. P. 7,1,25. MĀRK. P. 111,2. योक्तुं समुपचक्रमे MBh. 12,12580. mit beigefügtem योगम् *dass.*; act. BHAG. 6,12. MĀRK. P. 39,27. med. 28. युज्यते (समाधौ) DUĀTUP. 26,68. SIDDH. K. zu P. 7,1,71. युज्यते ब्रह्मचारी योगम् P. 3,1,87. VĀRTT. 5, Sch. युक्त *gesammelt, aufmerksam, vertieft, ganz bei der Sache seiend*: यो मे गिरंस्तुविज्ञातस्य पूर्वयुक्तेनाभि च्यरूपो गृणाति (sc. मनसा SĀJ.) RV. 5,27,3. यथा वा युक्तमात्मानं मन्येत तथा युक्ता ऽधीयीत स्वाध्यायम् ĀÇV. GRHJ. 3,2,2. ÇVETĀÇV. UP. 2,2. TAITT. UP. 1,11,4. MUNJ. UP. 3,2,5. RV. PRĀT. 14,28. M. 2,223. 243. 4,95. 100. 6,31. 7,142. 206. 9,312. 11,259. BHAG. 2,61. 6,8. 14. 8,14. MBh. 1,2339. 12,4142. 14,563. HARIV. 5236. fg. R. Gorr. 2,8,39. 3,72,7. 7,106,16. Spr. 3488. 4093. 4378. 4620. 5010. 5261. BHĀSHĀP. 64. सु° MAITRĀJ. 4,4. अ° BHAG. 18,28. यस्मिन्युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च *in den versenkt* ÇVETĀÇV. UP. 4,15. शत्रुसेविनि मित्रे च युक्ततरो भवेत् *gar sehr auf seiner Hut seiend* M. 7,186. युक्ततम BHAG. 6,47. — 5) *verbinden, zusammenbringen, aneinanderfügen; anreihen* RV. 1,163,5. अग्निं युनक्ति शर्वसा घृतेन VS. 18,51. स्तोत्रम् LĀTJ. 1,12,2. 2,5,20. ÇAT. Br. 14,8,11,2 (KAUSH. UP. 2,6). MAITRĀJ. 6,21 (med.). नूनं भूतानि भगवान्युनक्ति वियुनक्ति च BHĀG. P. 10,82,42. स हि प्रत्ययार्थमात्मना युनक्ति KĀÇ. zu P. 1,2,51. अश्वपादेन — द्वित्रन्मायोनि *wurde zusammengeführt mit* RĪĀA-TAR. 3,366. *pass. sich verbinden mit*: स तथा युक्तिभोजस्य दुहित्वा कुरुनन्दनः ॥ युयुजे *verband sich ehelich* MBh. 1,4420. fg. मन्त्रिभिर्युयुजे नीतिविशारदैः *er umgab sich mit* RAGH. 8,17. Jmd (acc.) *mit Etwas* (instr.) *verbinden* so v. a. *versehen, beschenken mit, Jmd einer Sache theilhaftig machen*: साह्यमानार्थसंभोगीर्युनक्ति MBh. 2,474. R. 1,9,68 (67 Gorr.). तत्रैतं तर्जनीर्धरैः

पुनः साह्यैश्च योद्यथ 3,62,33. यमं युनक्ति कालेन BHĀT. 6,37. आशीर्भिर्युञ्जतातुलाम् (so die ed. Bomb.) MBh. 1,7982. आत्मानं श्रेयसा योद्ये 3,2489. 7,696. ये ऽनागतौ वयमयुं ह्यमिह किल्विषयेषु BHĀG. P. 3,16,25. न मा समयभेदेन योक्तुमर्हसि HARIV. 10963. R. Gorr. 2,30,34. 33,34. मा दुःखिर्योक्तुमिच्छसि Spr. 4324. KUMĀRAS. 6,79. *pass. einer Sache* (instr.) *theilhaftig werden*: वेदपुण्येन युज्यते M. 2,78. फलनेन 7,128. 144. MBh. 3,2629. 10862. कालधर्मणा R. Gorr. 1,43,27. Spr. 1601. 3477, v. l. 3798. 4023. 4433. 4840. 4914. 5098. ÇĀK. 64,16. RAGH. 3,65. KUMĀRAS. 4,44. KATHĀS. 22,92. 30,34. BHĀG. P. 1,11,39. 3,7,5. mit dopp. instr. *durch Jmd einer Sache theilhaftig werden* MBh. 3,258. BHĀG. P. 1,11,24. statt des einfachen instr. der Sache auch der instr. mit सह् MBh. 13,7101. युक्त *verbunden, vereinigt, hinzugefügt, an einander gereiht, regelmässig auf einander folgend* VARĀH. BRH. S. 77,36. BHĀG. P. 3,26,51. 4,1,48. विशेषेण युक्ता ऽपसौ यत्तते RV. 7,79,2. 1,23,15. ÇĀÑKH. ÇR. 13,19,17. युक्तम् adv. *in Schaaren* ÇAT. Br. 12,4,4,3. युक्त *verbunden* —, *versehen mit, im Besitz von* (instr. oder im comp. vorangehend) RV. PRĀT. 1,19. मरुतैरसा M. 2,221. 6,70. 9,169. 11,53. MBh. 1,7982. 3,1807. 2076. 2802. 12,3496. सिद्धयया so v. a. *zu schaffen beabsichtigend* HARIV. 534. BHAG. 8,10. R. 1,4,3. 9. 20. 4,7. 7,18. 52,11. 53,7. 53,19. RAGH. 7,1. Spr. 790. SŪRJAS. 1,48. fg. VARĀH. BRH. S. 8,21. 13,19. 63,11. 77,6. 22. KATHĀS. 14,61. 18,229. 23,1. BHĀG. P. 1,2,15. 9,16. AK. 3,1,27. VOP. 3,143. द्विनेव युक्ता कदली गनेन *in Berührung gekommen mit* R. 3,33,61. फल° *verbunden mit* KĀTJ. ÇR. 1,1,2. AV. PRĀT. 3,89. 4,3. P. 2,3. 4. 8. 19. M. 9,310. 12,4. BHAG. 2,50. MBh. 1,7345. 3,2677. R. 2,26,25. धर्मयुक्त (वाक्य) 39,17. 34,19. 33,9. MEGH. 23. Spr. 2734. 3198. 3287, v. l. SĀÑKHĀK. 2. SŪRJAS. 2,63. VARĀH. BRH. S. 16,27. 17,10. 43,46. 50,8. 53,97. 53,20. 56,21. 80,15. 103,11. KATHĀS. 5,129. 33,124. AK. 1,1,3. 5. 2,8,2. 86. H. 527. LA. (III) 4,6. 33,17. 53,13. विंशतिशतयुक्ता *vierundzwanzig* VARĀH. BRH. S. 21,30. 23,7. 48,47. तेमयुक्तम् adv. (s. auch bes.) R. 1,13,10 nach dem Comm. hierher zu ziehen (तेमो विध्यपराधराहित्यं यदा तेमो विद्यराहित्यम्). तथा युक्तम् *auf diese Weise verbunden* RV. PRĀT. 2,15. तथा युक्तः *in solchem Zustande befindlich* MBh. 3,2958. *so verfahren* Spr. 4713. *verbunden mit* so v. a. *bezüglich auf*: गाथा यज्ञदानयुक्ताः KĀTJ. ÇR. 20,2,7. 8. शान्ति° KACÇ. 9. ज्ञातकर्मणि पुं-वद्विधानयुक्तानि MBh. 5,7407. तवादर्शनयुक्तेन शोकेन R. 5,32,37. KĀM. NITIS. 14,12. युञ् *pass. in Conjunction treten mit* (instr.): पदकः पुंसा न-तत्रेण चन्द्रमा युज्येत PĀR. GRHJ. 1,14. श्रेष्ठाद्यानि नवर्त्नीण्युपतिनातीत्य युज्यते VARĀH. BRH. S. 4,7. उत्तरा फल्गुनी न्यग्र्य अस्तु कृस्तेन योद्यते R. 5,73,15. यदा पुंसा नतत्रेण चन्द्रमा युक्तः स्यात् ĀÇV. GRHJ. 1,14,2. WEBER, ĠJOT. 70. VARĀH. BRH. S. 98,12. 104,56. पुष्ययुक्ते निशाकरे 48,45. 69,3. 98,16. अथ वार्हस्पतः श्रीमान्युक्तः पुष्येण (so die ed. Bomb.; किं नु वार्हस्पतो योगो युक्तः पुष्येण Gorr.) R. 2,26,9 (11 Gorr.). नतत्रेण युक्तः कालः P. 4,2,3. युक्तः कालेन यश्च न so v. a. *wer nicht die rechte Zeit benutzt* Spr. 4631. कालयुक्तं वाक्यम् *zeitgemäss* R. 1,32,1. देशकालार्थयुक्त BHĀG. P. 1,15,27. कायिणा मरुता युक्तः so v. a. *beschäftigt mit, begriffen in* MBh. 5,5427. (न) स्वभावमतवर्तते योनियुक्ताः शरीरिणाः *gebunden an, abhängig von* Spr. 4309. — 6) *mit sich verbinden*; mit acc.: (मरुतः) उभे युञ्जत (= योजयति SĀJ.) रौरसी RV. 6,66,6. 8,20,4.